भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 5 **अक्टूबर** 2004 **अंक** 10

किताबें कुछ कहना चाहती हैं

किताबें
करती हैं बातें
बीते जमाने की
दुनियों के इनसानों की
आज की, कल की
एक-एक पल की
खुशियों की गमों की
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में बोलियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकिट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या हम इस संसार में
नहीं आना चाहेंगे ? किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

— सफदर हाशमी

पढ़ना निवेश है
सोचने की क्षमता का

जिस विश्व में पैसा बनाना ही प्राथमिकता हो जाए वहाँ सीरियस रीडिंग की गुजाइश नहीं रह जाती। रचनाकार कम और सर्जक ज्यादा दिखते हैं। गति ने हमारे जीवन के सुखों को कम कर दिया है। किसी को फुर्सत या चैन नहीं है। पढ़ने की प्रक्रिया व्यक्ति से सोचने की आशा करती है। आखिर किताबों को पढ़ना एक निवेश है हमारी सोचने की क्षमता का। लेकिन लोग तो क्षणिक आनन्द चाहते हैं, इसलिए वे टीवी की ओर देखते हैं या सस्ती, घटिया किताबों की ओर उन्मुख होते हैं। परिणाम यह हो रहा है कि ये किताबें नशे की तरह क्षणिक आनन्द तो देती हैं पर साथ ही हमें समाप्त भी कर रही हैं।

— के० सच्चिदानन्द
सचिव, साहित्य अकादमी

राष्ट्रभाषा राजभाषा

8 अगस्त 1942 को महात्मा गाँधी ने राष्ट्रवाणी को मंत्र दिया, 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' कोटि कोटि जन ने उद्घोष किया, जेल गये, यातना सही, पर संकल्प था 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और एक दिन ऐसा आया जब 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। अपनी राजनीतिक सत्ता को त्याग देश से विदा लेना पड़ा। किन्तु उनकी छाया 'अंग्रेजी' हमारे नेताओं के मन में ऐसी बसी कि उससे कहा थोड़े दिन रुको, हम अपनी भाषा में अभ्यस्त हो जायँ, सक्षम हो जायँ तब जाना और इस तरह उस अतिथि को रोके ही नहीं रखा अपने घर-परिवार का सम्मानित सदस्य बना लिया जो हमारी पीढ़ी को अनगिनत कॉन्वेन्ट रूपी अंग्रेजी स्कूलों के माध्यम से प्रशिक्षित करती हुई सभ्य बना रही है। ब्रिटिश शासन काल के हिन्दी स्कूल बन्द होते जा रहे हैं, जिस तरह बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ गाँव-गाँव में अपने उत्पाद बेच रही हैं, उसी प्रकार गाँव-गाँव में अंग्रेजी भी बिक रही है।

आज याद आते हैं वे दिन जब आजादी के पूर्व राष्ट्रीय उद्बोधन में भारत एक राष्ट्र था। हिन्दी राष्ट्र की वाणी थी, प्रदेशीय भाषाएँ उसकी बहनें थीं। प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस आयोजित कर फूल-मालाएँ धारण करते हुए यह कहकर गौरवान्वित हो लेते हैं, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, हमें हिन्दी में ही कार्य करना चाहिए। (वी मस्ट अडाप्ट हिन्दी)। लगता है जैसे हम अपने पूर्वजों का श्राद्ध कर रहे हैं।

सड़क पर नारे लगाने वाला नेता जब सत्ता की कुर्सी पर बैठता है, वह सड़क पर चलने वाले अपने संगी-साथियों को भूल जाता है, सत्ता की कुर्सी उसे सुहावनी लगती है और वह मनसा, वाचा, कर्मणा सत्ता की उस कुर्सी को समर्पित हो जाता है।

राष्ट्रभाषा उस गिरि पर्वत की तरह है जिसे भगवान कृष्ण ने इन्द्र के कोप से गौओं की रक्षा के लिए अपनी अँगुली पर उठाया था और ग्वाल-बालों ने अपनी-अपनी लकुटियों से उसे सहारा दिया था। आज राष्ट्रभाषा को भी इसकी अपेक्षा है। प्रदेश की भाषाएँ-बोलियाँ वे लकुटियाँ हैं जो राष्ट्रभाषा को सामर्थ्यवान बनायेंगी। राष्ट्रभाषा को राजभाषा के लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए प्रदेशीय भाषाओं और बोलियों के शब्दों से अपनी भाषा को सम्पन्न करें। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस अपने कोशों में अनेक भारतीय भाषा और बोलियों के शब्द सम्मिलित कर अपनी भाषा की अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बना रही है, क्या हम अपनी भाषा में राष्ट्रभाषा से राजभाषा की दूरी समाप्त नहीं कर सकते। क्या हमने अपने हिन्दी कोशों को भारतीय भाषा के शब्दों से समृद्ध करने का प्रयास किया है ? क्या यह अनुभव कराया है कि आपकी भाषा के शब्द भी हमारे हैं, आपके शब्दों से ही राष्ट्रभाषा की मणिका पूर्ण होगी। अभी तक हम अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची ही ढूँढ़ते रहे जो हमारी जीवन-संस्कृति और कार्य शैली का बोध नहीं कराते।

भाषा हमारी सभ्यता, संस्कृति तथा दर्शन की दर्पण है, जिसमें हमारी अस्मिता सुरक्षित है, उसे न भूलें। वैश्वीकरण के युग में भी अपनी पहचान बनाये रखें, दबाव में अपने को समर्पित न करें।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

यत्र-तत्र-सर्वत्र

प्रेमचंद स्मारक

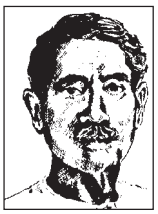

विगत 20 वर्षों से उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से प्रेमचंद की जन्मस्थली लमही में प्रेमचंद स्मारक स्थापित करने की चर्चा उठती रही है। पिछले दिनों संसद में भी जोर-शोर से प्रेमचंद स्मारक की घोषणा की गयी। वामपंथी नेता सरला माहेश्वरी ने जोरदार वकालत की। प्रेमचंद की 126वीं जयन्ती भी हो गयी और प्रेमचंद स्मारक की चर्चा भी राजनीतिक गलियारों में खो गयी।

1956 में काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रेमचंद की स्मृति में भव्य स्मारक बनाने का संकल्प किया था, जिसके अन्तर्गत प्रेमचंद की जन्म स्थली लमही में अतिथि गृह, प्रेमचंद के जन्म कक्ष में आदमकद प्रतिमा स्थापित करने की योजना थी। गाँव में प्रेमचंद महाविद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय खोलने की बात भी कही गयी थी। पुस्तकालय में प्रेमचंद का सम्पूर्ण साहित्य तथा उन पर लिखी गयी रचनाएँ उपलब्ध कराने की योजना थी। किन्तु यह सभी कालातीत हो गयी, लमही में प्रेमचंद की जो भी स्मृतियाँ थीं, भग्नावशेष होती गयीं।

इन सबसे निराश हताश प्रेमचंद के परिवार ने अनुभव किया कि इस संवेदनहीन राजनीतिक सत्ता में लिप्त सरकार घोषणाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकती। पिछले दिनों प्रेमचंदजी के पौत्र डॉ० कृष्णकुमार राय, प्रपौत्र डॉ० प्रदीप राय एवं अतुल राय ने कहा कि अब सरकार से आशा न कर हिन्दी और उर्दू समाज को साथ लेकर प्रेमचंद स्मारक को उनके कद के अनुसार भव्य रूप दिया जायगा।

प्रेमचंदजी का जो कुछ भी लमही में बचा है उसके पुराने स्वरूप को बचाना मुख्य लक्ष्य होगा। वहाँ एक अतिथि गृह जिसमें विद्वानों, शोधार्थियों के रुकने का इन्तजाम होगा, एक वाचनालय व संग्रहालय जिसमें प्रेमचंद से जुड़े सभी साहित्य उनके उपयोग की वस्तुओं तथा अन्य चीजों को संरक्षित किया जायगा। यह आकर्षक और सुन्दर होगा।

8 अक्तूबर को प्रेमचंदजी की पुण्यतिथि है। इस तिथि को दिल्ली, इलाहाबाद, गोरखपुर व वाराणसी के हिन्दी-उर्दू साहित्यकारों, अध्यापकों, छात्रों को एकत्र किया जायगा।

प्रदेश के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी एवं साहित्यकार श्री विभूतिनारायण राय प्रेमचंद के परिवारजनों के साथ उपस्थित थे। इससे आशा ही नहीं विश्वास है कि प्रेमचंद के वंशजों का संकल्प अवश्य ही पूरा होगा और काशी में बौद्धिक विरासत का पुनर्जन्म होगा। काशी के अनेक साहित्यकार राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द', भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशङ्कर प्रसाद की विरासत लुप्तप्राय है। काशी की गरिमा में केवल गंगा और विश्वनाथ का ही योगदान नहीं है, तुलसी, कबीर, रविदास तथा उन्नीसवीं-बीसवीं सदी के साहित्यकारों की भी भूमिका है जिनकी तलाश में अनेक बुद्धिजीवी काशी आते हैं।

काशी को बुद्धिजीवियों का नगर बनायें, ऐतिहासिक, पुरातात्विक स्थलों की रक्षा करें। याद रखें यह चार-चार विश्वविद्यालयों का नगर है, मिलकर क्या नहीं कर सकते ?

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति साहित्यकार सम्मान समारोह

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान-द्वितीय 2004 से अलंकृत हिन्दी एवं संस्कृत के प्रखर लेखक-चिन्तक डॉ० सियाराम सक्सेना 'प्रवर' (बायें से दूसरे)। डॉ० सक्सेना के दायीं ओर खड़े हैं प्रख्यात साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र कोहली

जयपुर में डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान द्वारा 28 अगस्त को आयोजित साहित्यकार सम्मान समारोह में संस्कृत, हिन्दी व ब्रजभाषा के मूर्धन्य विद्वान डॉ० सियारामजी सक्सेना को डॉ० राधेश्याम स्मृति सम्मान से अलंकृत किया गया। सम्मान स्वरूप ग्यारह हजार की राशि स्व० राधेश्यामजी शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती शर्मा व उनके पुत्र डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा तथा प्रशस्तिका संस्थान के अध्यक्ष राधेश्याम धूत द्वारा भेंट की गई।

स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा कृत पुस्तक 'साहित्य एवं संस्कृति चिन्तन' का विमोचन करते हुए प्रख्यात साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र कोहली (मध्य में) डॉ० कोहली के दोनों ओर खड़े हैं पुस्तक के सम्पादकद्वय राधेश्याम धूत (बाएँ) एवं डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा (दाएँ)

इस अवसर पर विख्यात साहित्यकार श्री नरेन्द्र कोहली का 'महाभारत के कृष्ण' विषय पर व्याख्यान हुआ। डेढ़ घण्टे तक चले व्याख्यान में श्री नरेन्द्र कोहली ने महाभारत की गहन शोध पर आधारित, कृष्ण के विविध आयामों का बड़ा सारगर्भित विवेचन अपनी अनुपम व रोचक शैली में प्रस्तुत किया।

इसी अवसर पर स्व० डॉ० राधेश्यामजी शर्मा के संस्कृतिपरक एवं साहित्यिक निबन्धों के संकलन 'साहित्य एवं संस्कृति चिन्तन' का लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक का सम्पादन श्री राधेश्याम धूत व डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा ने किया।

पश्चिम बंगाल में हिन्दी विरोधी लहर

बांग्ला साहित्य-संस्कृति की तीन संस्थाओं, नवजागरण, भाषा व चेतना समिति और भाषा शहीद समिति ने एकजुट होकर राज्य की सभी दुकानों की नाम पट्टिका बांग्ला में लिखने की मुहिम चला रखी है। तीनों संस्थाओं ने सुनील गंगोपाध्याय के नेतृत्व में जुलूस निकालकर नाम पट बांग्ला में लिखने का फतवा जारी किया।

यह मुहिम चला रहे बांग्ला भाषा प्रेमी कहते हैं, हम अंग्रेजी या हिन्दी के विरोधी नहीं हैं बंगाल में बांग्ला भाषा का हर स्तर पर इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिए हम सड़क पर उतरे हैं।

हिन्दी हिमायती संस्थाएँ इस मुहिम पर मौन साधे हुई हैं।

रामकुमार वर्मा जन्मशती

हिन्दी के प्रमुख विद्वान्, कवि एवं एकांकीकार डॉ० रामकुमार वर्मा की जन्मशती हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद द्वारा 15 सितम्बर 2004 से 14 सितम्बर 2005 तक मनायी जा रही है। डॉ० वर्मा 1975 से 1990 तक अकादमी के अध्यक्ष थे। जन्मशती के अन्तर्गत डॉ० वर्मा के साहित्य की प्रदर्शनी, उनके गीतों का गायन, उनके एकांकी का अभिनय आदि कार्यक्रम होंगे। डॉ० वर्मा का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिले में 15 सितम्बर 1904 को हुआ था। जब वह दसवीं कक्षा के छात्र थे मौलाना शौकत अली के भाषण से प्रभावित होकर 27 फरवरी 1921 को स्कूल छोड़ने की घोषणा कर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। चौरीचौरा काण्ड के बाद गाँधीजी के आन्दोलन वापस लेने पर अपनी माताजी के कहने पर फिर पढ़ाई शुरू की। 13 वर्ष की आयु से ही कविता लिखना शुरू कर दिया था।

डॉ० वर्मा कवि, एकांकीकार, नाटककार, आलोचक, इतिहासकार तथा विशिष्ट एवं सहृदय अध्यापक के रूप में स्मरणीय हैं।

तमिल प्रथम पौराणिक भाषा

तमिल विद्वानों और राजनेताओं की 120 वर्षों से की जा रही माँग को केन्द्र सरकार ने स्वीकार करते हुए तमिल भाषा को प्रथम प्राचीन पौराणिक भाषा की मान्यता प्रदान कर दी है। साहित्य अकादमी की विशेषज्ञ समिति ने प्राचीन पौराणिक भाषाओं के लिए एक अलग श्रेणी निर्धारित करने की सिफारिश की है। इस समिति ने किसी भाषा को प्राचीन भाषा स्वीकार करने के लिए कतिपय मानक निर्धारित किये हैं— भाषा का एक हजार वर्षों का प्राचीन साहित्य, लिपिबद्ध इतिहास, पीढ़ियों से वाचिक और साहित्यिक परम्परा जो मौलिक हो, किसी अन्य

भाषाविदों से गृहीत न की गयी हो। इतना ही नहीं पौराणिक भाषा और साहित्य को आधुनिक साहित्य से भिन्न होना चाहिए।

केन्द्र सरकार ने प्राचीन भाषाओं के विशिष्ट विद्वानों के लिए दो अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों की भी व्यवस्था की है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से केन्द्रीय विश्वविद्यालय में प्राचीन भाषाओं के लिए अध्ययनपीठ स्थापित करने का अनुरोध किया गया है।

तमिल विद्वानों का विश्वास है कि भारत में तमिल भाषा को प्राचीन भाषा का दर्जा दिये जाने से श्रीलंका, सिंगापुर और मलेशिया जैसे तमिलभाषी देशों में भी इस प्रकार का निर्णय लिया जा सकेगा।

मेरिलैंड विश्वविद्यालय, अमरीका में हिन्दी गोष्ठी

हाल ही में वाशिंगटन की 'हिन्दी समिति' की ओर से कवि श्री हरि बिंदल द्वारा शेडीग्रोव, मेरिलैंड विश्वविद्यालय में एक रचना गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि थे प्रख्यात व्यंग्यकार डॉ० हरीश नवल। गोष्ठी में भारत की ओर से डॉ० मृदुल कीर्ति, डॉ० स्नेह सुधा, डॉ० शशि तिवारी, कु० आस्था नवल और डॉ० भाभड़ा ने काव्य-पाठ किया। अमेरिका के हिन्दी रचनाकारों—श्री ओम पाठक, श्री मधु झावेरी, सुश्री आशा चाँद और श्रीमती दुर्गा ने कविताएँ पढ़ीं। विश्वविद्यालय के खचाखच भरे कक्ष में अमेरिका में स्थित मारीशस राजदूत डॉ० उषा जीता भी उपस्थित थीं और उन्होंने ने भी एक कविता पढ़ी। संयोजक श्री हरि बिंदल के अनुसार यह एक यादगार गोष्ठी थी जो देर तक याद रहेगी।

लन्दन में टेम्ज़ के किनारे हिन्दी कविता-पाठ

लन्दन की अग्रणी साहित्यिक संस्था 'वातायन' की आठवीं गोष्ठी पिछले दिनों रॉयल थियेटर, टेम्ज़ के किनारे आयोजित की गई। संस्था की अध्यक्ष प्रतिष्ठित कहानीकार सुश्री दिव्या माथुर ने विशिष्ट साहित्यकार अतिथियों डॉ० हरीश नवल, डॉ० स्नेह सुधा और कु० आस्था नवल जो भारत से पधारे थे, का स्वागत किया। कविता-पाठ का सफल संचालन जाने-माने कवि श्री तेजेन्द्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर अमेरिका की प्रख्यात हिन्दी लेखिका डॉ० सुष्म वेदी भी उपस्थित थीं। श्री पदमाकर ने 'भारत-वन्दना' गीत से गोष्ठी का आरम्भ किया। श्री अनिल जोशी ने 'धरती और बादल' प्रतीकात्मक कविता सुनाई। कैम्ब्रिज के प्रख्यात विद्वान कवि डॉ० सत्येन्द्र श्रीवास्तव ने 'रिचमंड ब्रिज' जैसी अपनी चर्चित कविता सुनाई। सुश्री दिव्या माथुर ने 'चन्दन पानी' सुना कर विभोर किया तो डॉ० स्नेह सुधा ने अपनी छोटी-छोटी कविताओं में बड़े-बड़े अर्थ व्यंजित किए। युवा कवयित्री कु० आस्था नवल ने 'उड़ान' और 'लड़की आज भी' सुनाकर भाव-विभोर किया। मुख्य अतिथि डॉ० हरीश नवल ने माता-पिता को समर्पित कविता 'होते थे अम्मा, बाबूजी' सुनाकर उपस्थित प्रवासी भारतीयों को उनके बचपन के परिवेश की करुण स्मृति दिला दी।

'सफर साठ साल का' लोकार्पण

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित ग्रन्थ 'सफर साठ साल का' का लोकार्पण 25 जुलाई 2004 को उनकी षष्टिपूर्ति समारोह में डॉ० आर०पी० सिंह कुलपति, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ तथा श्री सोम ठाकुर, उपाध्यक्ष उ०प्र० हिन्दी संस्थान ने संयुक्त रूप से किया।

इस समारोह में उपस्थित अन्य साहित्यकारों में प्रमुख थे—डॉ० कुँअर बेचैन, डॉ० योगेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ० अशोक चक्रधर, श्री निश्तर खानक़ाही, डायमण्ड पॉकेट बुक्स, दिल्ली के श्री नरेन्द्रकुमार।

भारत का आर्थिक इतिहास 21 खण्डों में छापने का निर्णय

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद ने ब्रिटिश शासनकाल में देश के आर्थिक इतिहास को 21 खण्डों में प्रकाशित करने की अपनी योजना फिर से शुरू करने का फैसला किया है। परिषद के सूत्रों के अनुसार समिति ने सन् 1857 से लेकर 1947 तक के भारत के आर्थिक इतिहास को प्रकाशित करने की योजना को फिर से शुरू करने का निर्णय लिया है। इस योजना के प्रधान सम्पादक अमियाकुमार बागची हैं जो नोबल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन के बाद देश के दूसरे महत्त्वपूर्ण अर्थशास्त्री माने जाते हैं।

काश, इस कालखण्ड के सामाजिक इतिहास की ओर भी दृष्टि जाती, जिसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, इससे समाज को नयी दिशा मिलती।

❑ ❑ ❑

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (एन०सी०आर०टी०) के निदेशक पद पर प्रो० कृष्णकुमार की नियुक्ति की गई है। प्रो० कुमार ने पदग्रहण करते हुए कहा—आज स्कूलों के पाठ्यक्रमों में गाँव का जीवन प्रतिबिम्बित नहीं होता है, क्योंकि पाठ्यक्रम शहरों में बन रहे हैं। इसके लिए गाँवों में परिषद की बैठक बुलायेंगे। शिक्षा विचार की भूमि है, विचारधारा की नहीं।

❑ ❑ ❑

एन०सी०आर०टी० के पूर्व निदेशक श्री जगमोहन सिंह राजपूत को यूनेस्को पुरस्कार से वंचित करने का प्रयास विफल हो रहा है। उनके विरुद्ध कोई आरोप सिद्ध नहीं कर पा सकने के कारण मानव संसाधन विकास मंत्रालय यूनेस्को को पत्र लिखकर राजपूत को पाक साफ बताने की तैयारी हो रही है।

❑ ❑ ❑

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने घोषणा की है कि साहित्यकारों के साथ पहलवानों को भी यश भारती पुरस्कार से सम्मानित किया जायगा। कुश्ती में पारंगत पहलवान मुख्यमंत्री को राजनीतिक कुश्ती के साथ पहलवानों की याद तो आई।

हम लोग भविष्य की चिन्ता में प्रायः वर्तमान को नष्ट कर देते हैं।

—जयशङ्कर प्रसाद

स्मृति शेष

व्यंग्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी

हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार **रवीन्द्रनाथ त्यागी** का शनिवार, 4 सितम्बर 2004 को रात्रि एक बजे देहरादून में निधन हो गया। वे अस्वस्थ नहीं थे, अकस्मात हृदयाघात हुआ और चले गये। त्यागी की व्यंग्य लेखन में अध्ययन और अनुभव का मणिकांचन योग था। 1 मई 1930 को उनका जन्म हुआ था। 'मल्लिनाथ की परम्परा', 'देवदारू के पेड़', 'शोक कथा', 'भद्र पुरुष', 'पराजित पीढ़ी के नाम', 'इतिहास का शव' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'लाल पीले फूल' निबन्ध संग्रह में **दीवाली फिर आ गई** निबन्ध का उपसंहार देखिए—

''देश में जो अन्धकार फैला है, वह अमावस्या के अन्धकार से कहीं ज्यादा ठोस है। सूचिभेद्यैः तमोभिः। देश के आधे नेता मंत्री हैं और उनमें से आधे भ्रष्ट हैं। एक प्रदेश के एक मंत्री हत्यारा होने के सन्देह में मंत्रिमण्डल से कल निकाले गए। मुख्यमंत्रियों ने अपने महल खड़े कर लिए हैं जिनमें हर रात दीवाली मनाई जाती है। अफसरों की हालत कुत्तों से बदतर हो गई है। मुख्यमंत्री के कहने पर गलत काम करने पड़ते हैं और फिर हाईकोर्ट या सुप्रीमकोट के सामने बेइज्जत होना पड़ता है। सब कुछ विधान के अनुसार हो रहा है, हालांकि वह या तो अपराध है या पाप है। हम सब भ्रष्ट हैं। विदेशियों से लड़ना आसान था, अपनों से लड़ना कठिन है।''

'एक साहित्यकार की मृत्यु' रचना में उन्होंने स्वयं लिखा—''साहित्यकार एक बहुत बड़ी चीज होता है। रोम के सम्राट रसातल को चल गये पर होमर अभी जिन्दा है। महारानी एलिजाबेथ इतिहास की जिल्दों में बन्द हो गयीं पर शेक्सपियर आज भी हमारे लिए खुला है। सम्राट विक्रमादित्य को लोग भूल सकते हैं पर कालिदास को नहीं।''

वे चाहते थे—''मैं चाहता हूँ कि मैं वसन्त में मरूँ। ताजी धूप के कफन में लिपटा हुआ जलूँ, जवान मौसम की अग्नि में, और मेरे मरने के बाद खिले, मेरी कब्र पर लाल फूल—गुच्छे के गुच्छे।''

रवीन्द्रनाथ त्यागी अपनी यथार्थवादी व्यंग्य रचनाओं के लिए सदैव याद किए जायँगे।

भारतीय अंग्रेजी कथाकार मुल्कराज आनंद

यशस्वी कृतिकार **मुल्कराज आनन्द** का 99 वर्ष की आयु में 28 सितम्बर 2004 को पुणे में निधन हो गया। परिवार में पत्नी और एक पुत्री हैं। मुल्कराज आनन्द अंग्रेजी में लिखने वाले प्रमुख भारतीय लेखक थे। 1935 में 'अनटचेबल' (अछूत) ने उन्हें ख्याति प्रदान की। 'कुली', 'टू लीव्ज एण्ड ए बर्ड', 'द विलेज', 'सोर्ड एण्ड द सिकल' आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। मुल्कराज आनन्द का भारतीय अंग्रेजी साहित्य में अप्रतिम योगदान है। उन्होंने भारतीय जीवन के वास्तविक और मर्मस्पर्शी क्षणों को भाषा प्रदान की। मुल्कराज आनन्द ने अंग्रेजी लेखकों में भारत को जो प्रतिष्ठा प्रदान की वह स्मरणीय है।

कथन

पाठ्य पुस्तकें कैसी हैं ?

हिन्दी की उन्नति के लिए जरूरी है कि पाठ्यक्रमों में परिवर्तन किये जायँ। अच्छी-अच्छी रचनाएँ पाठ्य-पुस्तकों में शामिल की जायँ।

पाठ्यक्रमों में ऐसी रचनाएँ हों, जिससे बच्चे अभिभूत हों। लेकिन आज हम बच्चों को ऐसी खराब रचनाएँ दे रहे हैं, जिससे उन्हें नींद आने लगती है। आजकल पाठ्यक्रमों में ऐसे-ऐसे खण्डकाव्य पढ़ाये जा रहे हैं जिनका सही अर्थ पढ़ाने वालों को ही नहीं मालूम है। साहित्य को असाध्य वीणा बना दिया गया है। पाठ्यक्रम ठण्डे कमरों में बैठकर थके-हारे लोग बना रहे हैं।

अहिन्दीभाषियों ने जितना काम हिन्दी के लिए किया है उतना खुद हिन्दीभाषियों ने नहीं किया।

— ममता कालिया

भूमण्डलीकरण के युग में हिन्दी

हिन्दी व उर्दू सगी बहनें हैं, लेकिन आज राजनीतिक लोग वोट की राजनीति के लिए उनको आपस में ही लड़ा रहे हैं। यह समय की माँग है कि यदि भारतीय के दायें हाथ में हिन्दी है तो उसके बायें हाथ में अंग्रेजी होनी चाहिए अन्यथा वह वर्तमान समाज में अपने को स्थापित नहीं कर पायेगा।

आज जौहर विश्वविद्यालय खुल रहे हैं जिसे वोट बटोरने के लिए माध्यम बनाया जा रहा है। उर्दू न मुलायम को आती है और न ही अमर सिंह को। उर्दू का विरोध भी उचित नहीं है लेकिन उसे हिन्दी की बलि देकर प्रचारित करना तो कत्तई उचित नहीं है। ये दोनों बहनें हैं जिसकी तुलसी का रामचरितमानस भी पुष्टि करता है। मानस में उर्दू के हजारों शब्दों का इस्तेमाल तुलसी ने किया है। यदि हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा की संज्ञा दे रहे हैं तो हमें अंग्रेजी को भी स्वीकारना होगा। हिन्दी की असली ताकत उसकी बोलियाँ हैं। भूमण्डलीकरण के दौर में बोलियों को नहीं भूलना चाहिए क्योंकि बोलियाँ ही हिन्दी की गंगोत्री है। यदि ये सूख गयीं तो हिन्दी भी सूख जायेगी। हमें बहुभाषिकता की ओर बढ़ना चाहिए। हिन्दी विश्व के कोने-कोने में मिल जायेगी। **—डॉ० नामवर सिंह**

साहित्य पर दलित या महिलावादी का ठप्पा लगाना अनुचित है। साहित्य तो समाज और व्यक्ति की चेतना का प्रतीक है। कविता और कहानी कोई प्रयोग नहीं है यह तो व्यक्ति की अनुभूतियों का सतत अभियान है। इसमें हम जीवन का रस एवं कड़वे, मीठे अनुभवों का आनन्द पाते हैं। यह तभी सम्भव हो पाता है जब लेखक वर्षों के संघर्ष के बाद एक स्वतंत्र चेतना का विकास करने में सफल होता है। **— निर्मल वर्मा**

दक्षिण भारत में हिन्दी की स्थिति पहले से बेहतर हुई है और नई पीढ़ी हिन्दी को शेष भारत से संवाद का जरूरी माध्यम मानने लगी है। हालांकि अकादमिक क्षेत्रों में हिन्दी आज भी उपेक्षित है। कर्नाटक और दूसरे बड़े शहरों में हिन्दी बोलना इन दिनों फैशन बनता जा रहा है। छात्र, पेशेवर लोग, व्यापारी और आधुनिक महिलाएँ तक बाजार में हिन्दी बोलना पसन्द करते हैं। कर्नाटक में, जहाँ हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य है, काफी छात्र तीसरी भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ना पसन्द करते हैं। हालांकि अंग्रेजी यहाँ अब भी पहले नम्बर पर है, फिर मातृभाषा की बारी आती है और अन्त में हिन्दी की।

दक्षिण भारत में हिन्दी जितनी आज लोकप्रिय है, उतनी पहले कभी नहीं रही।

कुछ शब्द मसलन 'बिल्कुल', 'मतलब' आदि शब्द निजाम के शासन के समय से ही तेलुगु भाषा का हिस्सा बन चुके हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है दशकों की उपेक्षा के बाद दक्षिण भारत में हिन्दी की अपनी एक हैसियत बनने लगी है। **— बी० शेखर**

आज भारतीय शिक्षा जगत के लिए माकूल शिक्षक तैयार करते हुए देश के शिक्षाजगत को दुतरफा चुनौती झेलनी होगी। उसे एक तरफ तो वे तमाम दायरे हटाने होंगे जो भारत की जनभाषाओं का सहज विस्तार रोक रहे हैं, और दूसरी तरफ उसे अंग्रेजी और निजी क्षेत्र में धनाढ्यता से उपजा वह दंभ भी सत्तासम्पन्न वर्ग के बीच से साग्रह हटाना पड़ेगा, जिसके कारण वह तोतारटंत और उधार की विद्या के बूते अलोकतांत्रिक ढंग से मिली दोयम दर्जे की ज्ञान प्रणाली को तो निजी क्षेत्र अच्छेपन और सफलता की इकलौती राह मानने लगा है, लेकिन शाला के बाहर खड़े एकलव्यों की सहज, आकुल जिज्ञासा उसे अ-लोकतांत्रिक और कुढ़ाने वाली लगती है।

अंग्रेजी सरकारी स्कूलों से हटी तो भी निजी स्कूलों में बनी रही। उधर सरकारी तबेले में खच्चर की हैसियत से बँधी स्कूली हिन्दी आलसी, थुलथुल और अकर्मण्य बन गई। धीमे-धीमे उसके तमाम पक्षधरों ने समझौतावादी तेवर अपनाकर स्वयं अपने राजकाज और अपने-अपने कुलदीपकों की पढ़ाई के क्षेत्र में पिछवाड़े के दरवाजों से जाकर अंग्रेजी को गले लगा लिया।

आज मुलायम, जॉर्ज, नीतिश आदि सब नेताओं के बच्चे महँगे निजी शिक्षण संस्थानों पढ़-लिखकर नई उच्च शिक्षा और तकनीकी हुनर से दमकते हुए नेतृत्व की उसी मलाईदार पंक्ति में आ बैठे हैं, जहाँ पायलट, गाँधी, प्रसाद, सिंधिया आदि ऊँचे घरानों के तमालद्रुम खड़े लहलहाते हैं। प्रजातंत्र के छह दशकों में भारत के भाषा और सत्ता के इस क्रमिक भारतीयकरण के चलते आज हालत यह है कि राजधानी दिल्ली में सरकार पचास से ऊपर हिन्दी माध्यम के वे सरकारी स्कूल बन्द कराने जा रही है, जहाँ छात्र दाखिला ही नहीं ले रहे, और दिल्ली विश्वविद्यालय भी भारतीय भाषाओं के कई पाठ्यक्रम निरस्त करने को बाध्य है, क्योंकि उनमें प्रवेश लेने को इच्छुक छात्र आ ही नहीं रहे।

— मृणाल पाण्डे, सम्पादक 'हिन्दुस्तान'

संस्कृत और हिन्दी एक ही सत्य के दो पक्ष हैं। कलेवर का जो भी भेद हो लेकिन संवेदना का कुछ भी भेद नहीं होता है। साहित्य के राजमहल में प्रवेश करने के लिए सहृदयता होनी चाहिए। केवल पाठ्यक्रम की कविता से पूरी हिन्दी की तस्वीर नहीं बनती है। इस राष्ट्र की सभी भाषाएँ अपने मूल उद्गम संस्कृत से जुड़ी हुई हैं। **— प्रो० राजेन्द्र मिश्र,** कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

श्री जयकिशनदास सादानी के हिन्दी से अंग्रेजी में अनुदित ग्रन्थों का लोकार्पण

श्री जयकिशनदास सादानी अनेक वर्षों से जयशङ्कर प्रसाद की रचनाओं का अंग्रेजी में अनुवाद करते आ रहे हैं। विगत 25 अगस्त 2004 को कोलकाता के श्रीपति सिंघानिया सभागार में प्रो० कल्याणमल लोढ़ा की अध्यक्षता में सादानीजी के हिन्दी से अनुदित चार ग्रन्थों का लोकार्पण हुआ—कामायनी, आँसू (जयशङ्कर प्रसाद), रोजरी ऑफ हिम्न्स (सूरदास के चुने पद), प्रमलोचा (डॉ० अम्बाशंकर नागर)। इस अवसर पर प्रधान अतिथि थे डॉ० रमारंजन मुखर्जी (पूर्व कुलपति, रवीन्द्र भारती एवं बर्दवान विश्वविद्यालय)। प्रो० विष्णुकान्त शास्त्री (पूर्व राज्यपाल, उत्तर प्रदेश) तथा डॉ० अम्बाशंकर नागर (अध्यक्ष, गुजरात राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी) प्रमुख वार्ताकार थे।

छायावाद के प्रवर्तक श्री मुकुटधर पाण्डेय का 1962 में सम्पादक को लिखा गया पत्र

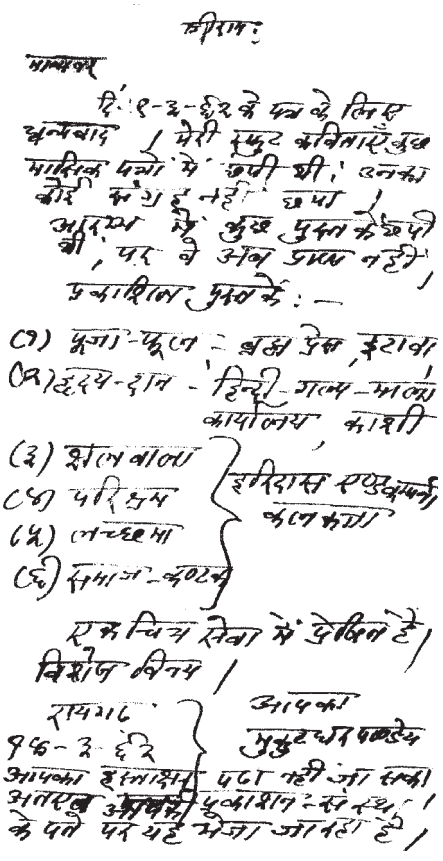

सम्मान-पुरस्कार

राजेन्द्र शाह
ज्ञानपीठ पुरस्कार से विभूषित

साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत ने 17 सितम्बर 2004 को मुम्बई के टाटा थ्येटर में गुजराती कवि **राजेन्द्र शाह** को 37वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। इस पुरस्कार के तहत शाह को पाँच लाख रुपये एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। शाह ने पुरस्कार की राशि एक धर्मार्थ संस्था को दान करने की घोषणा की। उपराष्ट्रपति ने साहित्य में शाह के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि शाह जैसे साहित्यकारों ने भारतीय भाषाओं की परम्परा को जीवित रखा है। शेखावत ने बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं का आह्वान किया कि वह इस बात का पता लगायें कि रामायण व महाभारत में उल्लिखित पुष्पक विमान ब्रह्मास्त्र काल्पनिक कथा का हिस्सा है या ऐतिहासिक तथ्य।

1913 में गुजरात के खेड़ा जिले के कपड़वंज में जन्मे रवीन्द्र और गाँधी युग की छाया में अपना लेखन प्रारम्भ करने वाले कवि राजेन्द्र शाह की कविताओं में सौन्दर्य और अध्यात्म का श्रेष्ठ समन्वय है। प्रकृति उनके काव्य में अपने पूरे वैभव में अवतरित हुई है। औपनिषदिक वेदान्त ने उनकी कविता को वैचारिक गहराई दी है। 92 वर्षीय श्री शाह ने अपने समय की हर चुनौती को स्वीकार करते हुए साहित्य में अपनी उपस्थिति बनाये रखी और काव्य-सृजन का क्रम जारी रखा। अब तक उनके 21 कविता-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं और वे देश के विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं।

इस अवसर पर उनकी सात दशकों की काव्य-यात्रा का भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित सर्वोत्तम संचयन 'साम्प्रत मैं चिरन्तन' का लोकार्पण भी किया गया। श्री शाह की कविताओं का चयन और सम्पादन गुजराती और हिन्दी पर समान अधिकार रखने वाले प्रमुख साहित्यकार डॉ० रघुवीर चौधरी ने किया है। इस संचयन में हिन्दी अनुवाद के साथ नागरी लिपि में मूल गुजराती कविताएँ भी प्रकाशित की गयी हैं।

सन् 1965 से अब तक 37 वर्षों की अवधि में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा 40 साहित्यकार पुरस्कृत हो चुके हैं। तीन बार दो-दो साहित्यकार संयुक्त रूप से पुरस्कृत हुए। यह पुरस्कार अब तक कन्नड़ को सात बार, हिन्दी को छह बार, बांग्ला को पाँच बार, मलयालम को चार बार, उड़िया, उर्दू और गुजराती को तीन-तीन बार, असमिया, गुजराती, मराठी, तेलुगु और पंजाबी को दो-दो बार और तमिल को एक बार प्राप्त हो चुका है।

अशोक वाजपेयी
पोलैंड सरकार द्वारा सम्मानित

भारत में पोलैंड के राजदूत डॉ० क्रिस्तोफ माइका ने महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व प्रख्यात साहित्यकार अशोक वाजपेयी को अंतरराष्ट्रीय समझ के लिए पोलैंड के 'ऑफिसर क्रॉस ऑफ मेरिट रिपब्लिक ऑफ पोलैंड' पुरस्कार से सम्मानित किया।

15वाँ श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार

मध्यप्रदेश के साहित्यकार **श्री जयशंकर** को उनके कथा संग्रह 'बारिश, ईश्वर और मृत्यु' के लिए 15वाँ श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार स्व० श्रीकान्त वर्मा के जन्मदिन 18 सितम्बर 2004 को एक समारोह में बिलासपुर छत्तीसगढ़ में दिया गया।

डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे को सरस्वती सम्मान

सोमवार 6 सितम्बर 2004 को राष्ट्रीय संग्रहालय सभागार, जनपथ, नई दिल्ली में मूर्धन्य साहित्यकार, इतिहासकार विद्वत्श्रेष्ठ **डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे** को उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत ने के०के० बिड़ला फाउण्डेशन के वर्ष 2003 के सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया। यह सम्मान डॉ० पाण्डे को उनकी संस्कृत में लिखे 163 कविताओं के संग्रह 'भागीरथी' के लिए प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप प्रशस्ति-पत्र तथा पाँच लाख रुपये की राशि दी गयी।

उपराष्ट्रपति श्री शेखावत ने कहा—मैंने 'भागीरथी' पुस्तक तीन बार पढ़ी है। मुझे जानकर प्रसन्नता है कि डॉ० पाण्डे इस कृति द्वारा सुमधुर संस्कृत भाषा का प्रसार कर रहे हैं। संस्कृत ने हमें सर्वप्रथम वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में एकता, प्रेम और भाईचारे का सन्देश दिया।

इस अवसर पर डॉ० पाण्डे ने कहा—भागीरथी पुण्य जल प्रवाहिनी सरिता मात्र नहीं है। हमारे पूर्वजों की प्रार्थना-आराधना से पृथ्वी पर अवतरित हुईं। भारतीय संस्कृति और इतिहास मेरे लिए साहित्य-सरिता है।

संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति को कविकुल कालिदास पुरस्कार

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० राजेन्द्र मिश्र को महाराष्ट्र सरकार की ओर से अखिल भारतीय कविकुल कालिदास पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार महाराष्ट्र के राज्यपाल मो० फजल ने 29 अगस्त को सेंद्रम कालेज के डॉ० अम्बेडकर हाल में प्रो० मिश्र को 25 हजार नकद, प्रशस्तिपत्र व अंगवस्त्रम भेंटकर सम्मानित किया। प्रो० मिश्र उत्तर प्रदेश के एकमात्र ऐसे कुलपति हैं, जिन्हें कविकुल कालिदास पुरस्कार पाने का गौरव प्राप्त हुआ है।

यह उल्लेखनीय है कि प्रो० मिश्र को उत्तर प्रदेश साहित्यिक सम्मान-11 बार, दिल्ली संस्कृत अकादमी पुरस्कार-तीन बार, राजस्थान संस्कृत अकादमी सर्वोच्च पुरस्कार, कालिदास सम्मान-मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी (भोपाल) से दो बार, साहित्य अकादमी अवार्ड, वाचस्पति सम्मान, कल्पवल्ली पुरस्कार, डॉ० रामकुमार वर्मा एकांकी पुरस्कार, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती साहित्य सम्मान, डॉ० विद्यानिवास मिश्र संस्कृत सम्मान, सहस्राब्दी रत्न सम्मान, डॉ० ओगेटि अच्युतराम शर्मा संस्कृत पुरस्कार, मानस संगम साहित्य सम्मान, महामहोपाध्याय ब्रह्मर्षि के साथ ही वर्ष 1991 में तत्कालीन राष्ट्रपति के०आर० नारायणन द्वारा राष्ट्रपति सम्मान से पुरस्कृत किया जा चुका है।

अवतंश रजनीश को विशिष्ट सम्मान व अभिनन्दन

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनंतपुरम ने 23 अगस्त 2004 को अपने चौबीसवें वार्षिकोत्सव में रायबरेली के पत्रकार-साहित्यकार 'धरती और चाँद' पत्रिकाओं के प्रधान सम्पादक **अवतंश रजनीश** का अभिनन्दन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता डॉ० चन्द्रशेखरन नायर, अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने की। इस समारोह में महामहिम महाराजा श्री उत्राटम तिरूनाल मार्तण्ड वर्मा तथा महारानी आदरणीया श्रीमती आश्वति तिरूनाल गौरी लक्ष्मीबाई तंपुराट्टी, डॉ० एन० राधाकृष्णन-निर्देशक गाँधी स्मारक निधि, श्री निवासन आई०ए०एस० लेबर कमिश्नर केरल सरकार, श्रीमती डॉ० एस० तंकमणि अम्मा, डॉ० एम०एल० गुप्ता, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ० बालमोहन तंपी पूर्व उप-कुलपति केरल विश्वविद्यालय, डॉ० वेल्लामणी अर्जुन, अध्यक्ष सर्वविज्ञान कोश, केरल सरकार, रवीन्द्रलाल शर्मा, महाप्रबन्धक स्टेट बैंक आदि की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। श्री अवतंश रजनीश को विशिष्ट सम्मान स्वरूप अंगवस्त्र, प्रतीक चिह्न, दीपस्तम्भ, प्रशस्ति-पत्र के साथ दो हजार रुपये नकद धनराशि प्रदान की गयी।

हिन्दी विद्वान् सम्मानित

हिन्दी साहित्य में विशिष्ट अवदान के लिए जयपुर में 20 सितम्बर 2004 को राजस्थान के सर्वश्री रामप्रसाद दधीच, रामेश्वरदयाल, श्री माली तथा सावित्री रांका राजस्थान के पूर्व उप-मुख्यमंत्री श्री हरिशंकर भाभरा द्वारा सम्मानित किये गये। इस अवसर पर श्री भाभरा ने कहा—आत्मा और मस्तिष्क की सन्तुष्टि के लिए साहित्य का प्रवाह निरन्तर होना चाहिए। अध्यात्म और साहित्य एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों मनुष्य की बौद्धिक अपेक्षा के लिए आवश्यक है। इस अवसर पर राजस्थान संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष श्री कलानाथ शास्त्री तथा अन्य उपस्थित थे।

गैर हिन्दी साहित्यकार पुरस्कृत

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने केरल के **डॉ० वेणुगोपाल कृष्ण** को हिन्दी में विशिष्ट योगदान के लिए एक लाख एक हजार रुपये का चेक प्रदान किया। असम के **देवेन्द्रचन्द्र दास** को उनकी

हिन्दी सेवा के लिए राशि उनके घर भेजने का आदेश दिया।

इसी सन्दर्भ में उन्होंने घोषणा की कि उत्तर प्रदेश में जूनियर कक्षाओं में अनिवार्य रूप से एक क्षेत्रीय भाषा पढ़ाई जायगी। हिन्दी तथा गैर हिन्दी भाषाओं के बीच साहित्यिक विनिमय, सौहार्द स्थापित करने के लिए गैर हिन्दी राज्यों के साहित्यकारों को दिये जाने वाले पुरस्कार की राशि 20 हजार से बढ़ाकर एक लाख एक हजार कर दी गयी है।

यह उल्लेखनीय है कि हिन्दी क्षेत्रीय भाषाओं के लिए श्री विश्वनाथप्रसाद सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में भाषा विभाग की स्थापना की गयी थी, किन्तु यह विभाग पुस्तकों की भ्रष्ट खरीद तक सीमित रह गया। संस्थाओं को क्षेत्रीय भाषाओं के शिक्षण के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जा सका। यदि क्षेत्रीय भाषाओं के ज्ञाता को सरकारी नौकरी में वरीयता दी जाय और उन्हें उस प्रदेश में प्रदेश के प्रतिनिधि रूप में नियुक्त किया जाय तो इससे परस्पर सद्भाव बढ़ेगा।

आज राजनेताओं को देश में राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

ऐसी हैं पाठ्य पुस्तकें

राष्ट्रीयता का दम्भ भरने वाली गुजरात सरकार की सातवीं और आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक के नक्शे में कश्मीर को पाकिस्तान का भाग दिखाया गया है। केरल में राष्ट्रीय गान से गुजरात को गायब कर दिया गया। नेता अपनी राजनीतिक सत्ता बनाये रखने के प्रयास में देश की अस्मिता को भूल रहे हैं।

कबाड़ी की दूकान ने बनाया लेखक

एक किशोर जैसे ही कोई पुस्तक उठाकर पढ़ना शुरु करता है, उसका पिता पुस्तक छीन कर फेंक देता तथा उसकी पिटाई करते हुए घर का काम करने को कहता।

एक दिन बेटे को चुपचाप पुस्तक पढ़ते देख, पिता ने पुस्तक फाड़ दी और बोला, ''इन किताबों को पढ़ने में क्यों अपनी जिन्दगी खराब करता है। मजदूरी कर, तभी परिवार का काम चलेगा।''

बेटे ने एक कबाड़ी की दुकान में नौकरी कर ली, जहाँ उसे तरह-तरह की किताबें मिलने लगीं। वह समय मिलते ही उन्हें पढ़ने लग जाता। विभिन्न विषयों को पढ़ने से उसका ज्ञान बढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते उसे लिखने की भी ललक पैदा हुई।

उसने एक कहानी लिखी और एक पत्रिका में छापने भेज दिया। कहानी छपने पर एक प्रसिद्ध लेखक ने उसकी प्रशंसा में एक पत्र लिखा।

युवक का उत्साह बढ़ा और एक दिन उसने माँ (मदर) नाम से ऐसा उपन्यास लिखा, जो विश्व की श्रेष्ठतम पुस्तकों में गिना जाता है। मैक्सिम गोर्की नामक उस किशोर की गणना आज संसार के श्रेष्ठतम लेखकों में होती है।

— शिवकुमार गोयल

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' में हिन्दी की गतिविधियों का प्रमुख स्थान है, जो राष्ट्रभाषा के प्रसार का प्रवाह दर्शाता है। परन्तु पत्रिका के प्राण आपकी अपनी अभिव्यक्तियों में रहते हैं, जिनकी प्रतिबद्धता तथा प्रवीणता समस्याओं को जितना उभारती है, उतना ही उनके समाधान की दिशा निर्धारित करती है। इस दृष्टि से 'भारतीय वाङ्मय' वास्तव में हिन्दी के संवर्धन का स्तुत्य प्रयास है। जहाँ-तहाँ मणियों की तरह जो अन्य पुरोधाओं के उद्गार जड़े रहते हैं, उनसे 'वाङ्मय' जाज्वल्यमान हो जाता है। ऐसा प्रकाशन निरन्तर प्राप्त करना और पढ़ना, मानसिकता का नवीकरण होता जाता है। आपने हिन्दी का झण्डा ऊँचा कर रखा है।

कई बार उक्तियाँ ही पक्ष-प्रतिपक्ष की द्योतक हो जाती हैं, जैसे सितम्बर अंक के प्रथम पृष्ठ पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल और मुख्यमंत्री के उद्गार। परन्तु इनके ऊपर होती है चेतना जो चिन्ता को बढ़ाती रहती है— ''सभी राज्यों की अपनी-अपनी शिक्षा नीतियाँ हैं। ये शिक्षा नीतियाँ राजनीति प्रधान यानि वोट प्रधान हैं।'' राजनीति और वोटों की अभिलाषा हर उपाय को प्रदूषित कर देती है। भाषा हो या शिक्षा, उसकी मुक्ति समय की समस्या बन गयी है। इस ओर व्यग्रता से ध्यान आकर्षित कर 'भारतीय वाङ्मय' ऊर्जा निर्मित कर रहा है। इसमें आप अधिकाधिक सफल हों, यह मेरी कामना है।

— राजेन्द्रशंकर भट्ट
साहित्य वाचस्पति एवं भूतपूर्व अध्यक्ष
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, जयपुर

सितम्बर अंक में 'इतिहास का धर्मयुद्ध' शीर्षक वक्तव्य, 'कथन' में श्री भगवान सिंह के शब्द साहस और विवेक के प्रतिनिधि हैं। 'भारतीय वाङ्मय' तेजस्वी पत्रकारिता का प्रतिमान बन गया है।

— श्रीकृष्णचन्द्र गोस्वामी, भरतपुर

पत्रिका से विभिन्न प्रकार की साहित्यिक सूचनाएँ प्राप्त होती है। ज्ञान की गंगा के प्रवाहक डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व गागर में सागर सदृश लग रहा है। सम्पादकीय नफरत के बीज बोती 'किताब' विचारोत्तेजक एवं सारगर्भित है। बधाई।

— श्यामसुन्दर 'सुमन', भीलवाड़ा

'भारतीय वाङ्मय' नियमित मिलती है। प्रत्येक अंक भव्य व उपयोगी है।

नवीनतम अंक में आपने मनीषी वासुदेवशरण अग्रवाल पर श्रद्धांजलि दी है। वह लेख संक्षिप्त, सारपूर्ण और रोमांचक है।

— एन०ई० विश्वनाथ अय्यर, तिरुअनंतपुर

हिन्दी-अहिन्दीभाषियों को साहित्यिक-संस्कृति को एक-सूत्र में पिरोने का प्रयास करने वाली लघु पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' प्रथम परिचय में ही भा गयी। भारत-पाक के आपसी निश्शंक मेल-मिलाप का स्वर घोष करने वाली सम्पादकीय टिप्पणी अत्यन्त प्रासंगिक है, तथा उसमें भारत के सौम्य सौह्रादमय जन-लालसा की अनुगूँज व्यक्त हुई है; यह आपकी ही नहीं, भारत-पाक के जन-जन की इच्छा है। देश, भाषा, जाति-धर्म की धूनी रमाकर विघटन के लिए उद्यत-उद्धत-विनाशकारी कर्कश शोर में, ऐसी ध्वनि शीतल मन्द बयार का सुखद अहसास लगती है।

— आनन्दप्रकाश
2-1-189, नल्लाकुण्टा, हैदराबाद-500 044

आपका 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका हर महीने मेरे को मिलते हैं। 'भारतीय संस्कृति' वेदों के बारे में बहुत अच्छा कवर दे रहे हैं। अगस्त संचिका में 'ज्ञानगंगा के प्रवाहक' हेडिंग से जो लिखा बहुत अच्छा है। श्री वासुदेवशरण अग्रवाल के बारे में तेलुगु ग्रन्थों में पढ़ा था। उनका तस्वीर (फोटो) पहली बार देखा। इसके लिये बहुत धन्यवाद है। आपका

— वासुदेव आचार्य, हैदराबाद

हिन्दी की ऐसी पाठ्य पुस्तकें

अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा प्रकाशित बी०ए० प्रथम वर्ष के लिए तथाकथित दो डी०लिट्० विद्वान् अध्यापकों द्वारा सम्पादित कहानी संग्रह 'कथाधारा' में सुप्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर को कहानीकार के परिचय के अन्तर्गत मृतक घोषित कर दिया गया है। इस कहानी संग्रह के सम्पादक हैं—डॉ० प्रेमनारायण श्रीवास्तव, डी०लिट्० रीडर/अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आई०ओ०पी० कॉलेज, वृन्दावन, संकलनकर्ता हैं—डॉ० श्री भगवान शर्मा डी०लिट्० रीडर, हिन्दी विभाग, सेंट जॉन्स कालेज, आगरा।

यह उत्तर प्रदेश के अति प्राचीन विश्वविद्यालय की पाठ्य-पुस्तक का नमूना है। यदि शिक्षा विभाग जाँच करे तो ज्ञात होगा कि प्रदेश में नवस्थापित विश्वविद्यालय जिनमें सम्बद्ध विश्वविद्यालयों के तथाकथित रीडर व अध्यक्ष पाठ्य समिति के सदस्यों द्वारा सम्पादित पाठ्य-पुस्तकों के क्या-क्या रूप हैं। छात्रों की संख्या के अनुसार प्रति पुस्तक बीस हजार से एक लाख रुपये तक पाठ्य समिति के संयोजक और सदस्य प्रकाशकों से राशि प्राप्त कर पुस्तकें प्रकाशित कराते हैं। उनकी विषयवस्तु, उनका रंग-रूप देखिए, कुंजी और गाइड से भिन्न नहीं होता इसलिए कि पुस्तक में पाठ्य अंश के साथ कुंजी और गाइड होने पर पुस्तक अधिकाधिक बिकेगी। हिन्दी के ये विद्वान् हिन्दी की दुर्दशा करते हुए हिन्दी का दोहन कर रहे हैं। क्या हिन्दी की यही नियति है?

पुस्तक समीक्षा

वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप

प्रो० युगेश्वर

प्रथम संस्करण : 2004

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

मूल्य : 90.00

भारतीय जन-जीवन में कृष्ण काव्यधारा का महत्त्व अप्रतिम है। कृष्ण के क्रिया-कलाप, उनकी छलकती प्रेमरस साधना, उनकी लोक व्यवहार की अद्‌भुत समझ, नीमित्ता, बल पौरुष, कार्य कुशलता सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिए एक पाथेय है। भारतीय जन-जीवन में उनकी प्रभावकारी उपस्थिति अनेक काव्यों, महाकाव्यों ग्रन्थों को आकार देने में समर्थ होती रही। कृष्ण धर्म के विग्रह तो हैं ही, पारलौकिक सत्ता के केन्द्र बिन्दु भी हैं। साथ ही लौकिक जीवन के प्रेरणास्पद भी हैं। उनमें लोक-परलोक का अद्‌भुत सामंजस्य है। बाल्यावस्था की किलकारी से लेकर उत्तरवर्ती जीवन के बौद्धिक जटिल प्रश्नों तक उनकी समान गति है। गोपियों के साथ रास, ग्वालबालाओं के साथ गो-चारण, अर्जुन को साथ लेकर युद्ध, योगियों के बीच योगेश्वर, भक्तों के बीच भगवान, गोपियों के बीच कन्हैया न जाने उनका व्यक्तित्व भारतीय जन-जीवन के कितने आयामों में समरस है। व्रज तो उनकी भूमि ही है। व्रजलीला के उनका स्वाभाविक कर्म है।

ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व से सम्पन्न कृष्ण योगियों, साहित्यकों, दार्शनिकों, प्रेमरस साधकों के उपजीव्य बनें तो क्या आश्चर्य? आचार्य वल्लभ द्वारा स्थापित अष्टछाप भक्त कवि मण्डल द्वारा आठों प्रहर में भजनों का गायन उनकी महत्ता को ही द्योतित करता है। इन अष्टछाप कवियों में सूरदास की वीणा के स्वर अत्यन्त मधुर हैं, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि अन्य कवि प्रातिभ ही नहीं हैं, अन्य कवियों ने भी उनकी रसमाधुरी, नीतिनैपुण्य, भगवत्ता का वर्णन बड़े ही लालित्यपूर्ण ढंग से प्रकट किया है। हिन्दी साहित्येतिहास में इन अष्टछाप कवियों पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, पर आज दलित, नारी और प्रगतिवादी समीक्षा के झंझावात में जन-जीवन से सम्पृक्त कृष्ण भक्त कवियों को प्राय: विस्मरण की कुहेलिका में छोड़ दिया गया है। नारी और दलित के प्रति छद्म सहानुभूति ने एक बड़े साहित्यिक षडयंत्र का सृजन किया है। ऐसे षडयंत्रों को भेदने के लिए और भारतीय जनमानस की संस्कृति के लिए प्रो० युगेश्वर द्वारा रचित 'वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप' नामक पुस्तक पर्याप्त प्रभावी होगी।

डॉ० युगेश्वर प्रख्यात कथाशिल्पी तथा भारतीय जनमन के समीक्षक हैं। पुस्तक में समीक्षात्मक निबन्ध इसके प्रबल प्रमाण हैं। पुस्तक के कथ्य और रहस्य को निबन्ध पूर्णत: उद्‌घाटित कर देते हैं। सामाजिक सरोकार की रट लगाने वालों को ये निबन्ध एक दृष्टि देंगे। मनोरंजन के अतिरिक्त भी कृष्ण काव्य की भूमिका उन्हें इस ग्रन्थ में दिखायी पड़ेगी। कृष्ण की सामाजिकता-समाजीकरण पर भी कई समीक्षात्मक दृष्टि इस पुस्तक में दर्शनीय है।

सूरदास के पद तो अत्यन्त प्रचलित हैं। उनकी उपलब्धता सर्वत्र है, पर अन्य अष्टछापी कवियों का पाठ देकर प्रो० युगेश्वर ने सराहनीय कार्य किया है। नन्ददास, परमानन्ददास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास, कृष्णदास और कुम्भनदास पर आलोचनात्मक टिप्पणी और उनके मूल पाठ पुस्तक की उपादेयता बढ़ा देते हैं। हिन्दी साहित्य की अन्य धाराओं पर भी ऐसे कार्य अपेक्षित हैं।

— उदयप्रताप सिंह

एकनाथ की भागवत

रूपान्तरकार : **ना०वि० सप्रे**

प्रथम संस्करण : 2004

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पृष्ठ : 656 (7.5'' × 10'') मूल्य : 600.00

महाराष्ट्र के वारकरी पंथ के संतों में एकनाथ का स्थान अद्वितीय है। ज्ञानेश्वर महाराज ने 'ज्ञानेश्वरी' के माध्यम से ज्ञान का भण्डार महाराष्ट्र के लोगों को उपलब्ध कराया। उनके देह विसर्जन के बाद नामदेव ने सन् 1350 तक उनका ज्ञानप्रसार का कार्य अच्छी तरह निभाया। किन्तु सन् 1350 से 1550 के बीच का दो शतकों का काल मुस्लिम राज्य की स्थापना एवं उसके कारण महाराष्ट्र के जनजीवन में हुई उथल-पुथल एवं नैराश्य का काल था। दुर्भाग्यवश उस समय समाज में कोई महापुरुष नहीं था जो समाज को उस स्थिति से उबार पाता।

सौभाग्यवश सन् 1550 में एकनाथ का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने महाराष्ट्र में परमार्थ विषयक लोकजागृति को जन्म दिया। उन्होंने महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय में आयी शिथिलता को दूर कर उसे नया चैतन्य प्रदान किया।

एकनाथ को ज्ञानेश्वर का अवतार कहा जाता है। उन्हें गुरुमुख से ज्ञानेश्वरी सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ज्ञानेश्वर और एकनाथ के बीच लगभग तीन सौ वर्ष का अन्तर था किन्तु हृदय से वे दोनों एक थे। उनके मस्तिष्क पर ज्ञानेश्वरी का इतना अधिक प्रभाव था कि उन्होंने भागवत पुराण के ग्यारहवें स्कन्ध पर विस्तृत टीका लिखी। एकनाथी भागवत वास्तव में ज्ञानेश्वरी की ही विस्तृत टीका है, ज्ञानेश्वरी का नया अवतार है। इसे ज्ञानेश्वरी का पूरक ग्रन्थ भी कहा जाता है।

एकनाथ ने ज्ञानेश्वर का ऋण 'ज्ञानेश्वरी' का पाठ-संशोधन तथा ज्ञानेश्वरजी की समाधि का जीर्णोद्धार कर चुकाया। एकनाथी भागवत भागवत धर्म की नींव का पत्थर है। कथारूप होने के कारण एकनाथजी उसका निरूपण करते समय भावनाओं के सागर में बह जाते हैं। ग्रन्थ में विशेषण प्रचुर मात्रा में है लेकिन इससे रसभंग नहीं होता। पाठक भाषा की ओजस्विता और माधुर्य के कारण रसास्वादन में खो जाता है।

शङ्कर ज्योति

स्वा० सोमा स्कन्दन्

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पृष्ठ : 618, 54 दुर्लभ चित्र मूल्य : 350.00

आदि शङ्कराचार्य के जन्म, कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर यह प्रामाणिक तथा विस्तृत महाग्रन्थ है। इस महाग्रन्थ में प्रथम पीठाधिपति आदिशंकराचार्य से लेकर 69वें वर्तमान पीठाधिपति जयेन्द्र सरस्वती महाराज तक का विस्तृत इतिहास एवं सभी आचार्यों की साधना तथा लोकसेवा का विस्तृत विवरण ग्रन्थ में दिया गया है। विषय के विस्तृत आयाम में सनातनधर्म की लोक परम्परा धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास, महापुरुष, सन्त, धर्माचार्य, धर्माध्यक्ष, दर्शन, राजनीति, व्यक्ति सदाचार, लोकसंग्रह (लोक कल्याण) का पूरा विवरण ग्रन्थ में दिया गया है। ग्रन्थ में विज्ञानवाद और बुद्धिवाद के दर्शन को आद्योपान्त ताना-बाना के रूप में स्वीकार किया गया है। अत: ग्रन्थ पौराणिक चेतना, इतिहास चेतना और विज्ञान चेतना से संबलित है। यह ग्रन्थ सामान्य पुस्तक कोटि में नहीं आता। पुराण, इतिहास और शंकराचार्य की ढाई हजार वर्ष की महती परम्परा तथा लोकसेवा को विषय बनाकर लिखा गया यह ग्रन्थ अपने कलेवर में एक अभिनव पुराण या सम्यक् संज्ञा में 'शंकर पुराण' के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। यह ग्रन्थ (पुराण) केवल सनातनधर्मावलम्बियों के लिए ही नहीं, समस्त भारतवासियों तथा भारत को जानने की जिज्ञासा रखने वाले विश्व के प्रत्येक नागरिक के लिए समान रूप से उपयोगी है। इस महाग्रन्थ के रचनाकार तमिल, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत के पण्डित तथा कांचीकामकोटिपीठम् के श्रद्धालु सनातनधर्मी विद्वान् अनुयायी पण्डित स्वा० सोमस्कन्दनजी हैं।

मेरा देश है, मेरे पहाड़ हैं और मेरी नदियाँ हैं और मेरे जंगल हैं। इस भूमि के एक-एक परमाणु मेरे हैं, और मेरे शरीर के एक-एक क्षुद्र अंश इन्हीं परमाणुओं के बने हैं।

—जयशङ्कर प्रसाद (चन्द्रगुप्त)

श्री सीतारामचरित तिथि दर्पण (रामायणम्)

प्रथम तथा द्वितीय खण्ड

लेखक एवं प्रकाशक : दामोदर भाई 'लीला' दोसी, शोध संस्थान, 23 गुरुकृपा मोहन कालोनी बाँसवाड़ा - 327 001 (राजस्थान)

प्रत्येक खण्ड का मूल्य : 250.00

दोमोदरभाई 'लीला' के ग्रन्थ श्री सीताराम चरित तिथि दर्पण (रामायणम्) द्वितीय खण्ड, विष्णु अंक का लोकार्पण करते हुए जगद्गुरु शंकराचार्य श्री विजयेन्द्र सरस्वतीजी 70वें पीठाधिपति कांचीमठ, कांचीपुरम (चेन्नई) ग्रन्थ प्रस्तुत करते हुए दामोदरभाई

श्रीराम तथा सीताजी के जीवन से सम्बन्धित समस्त प्रसंगों व लीलाओं का तिथि, वार, मास व आयु आदि इस ग्रन्थ में दर्शाया गया है। वाल्मिकी रामायण तथा तुलसीदास के रामचरितमानस के प्रसंगों का तिथि तथा वार के अनुसार वर्णन किया है।

दामोदर भाई का यह शोधपरक ग्रन्थ अनूठा है। श्रद्धा, समर्पण और ज्ञान की ललक से परिपूर्ण यह प्रयास सर्वथा सराहनीय ही नहीं श्रद्धास्पद है। दामोदर भाई का इस भक्तिमय शोध के लिए अभिनन्दन।

परिचय

मिलाप राजभाषा पत्रिका

अहिन्दी प्रदेश हैदराबाद से 15 अगस्त 2004 से पाक्षिक 'मिलाप राजभाषा पत्रिका' प्रकाशित हो रही है। राष्ट्रभाषा से राजभाषा की दिशा में यह सर्वथा सराहनीय प्रयास है। भले ही हिन्दी का स्वरूप राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित नहीं हुआ है किन्तु भूमण्डलीकरण के इस युग में हिन्दी व्यवसाय की भाषा के रूप में विश्व की दूसरी बड़ा भाषा हो गयी है। इस दिशा में 'हिन्दी मिलाप' द्वारा यह प्रयास सर्वथा सराहनीय है। अहिन्दीभाषी प्रदेश जब भी हिन्दी की बात करते हैं, उसे गम्भीरता से लेते हैं, ऐसा लगता है, एक दिन दक्षिण के हिन्दी विद्वान् उत्तर भारत के हिन्दीभाषियों को हिन्दी सिखायेंगे।

प्रथम अंक के लेख हैं—

भारत के संविधान में राजभाषा की परिभाषा, इण्टरनेट पर हिन्दी की समस्या, हिन्दी नाट्य लेखन की स्थिति, जन-जन को जोड़ें हिन्दी से, भारतीय भाषाओं का संकट, मंगलूर में हिन्दी की जीती जागती दुनियाँ।

इन लेखों से 'मिलाप राजभाषा पत्रिका' का स्वरूप स्पष्ट है। यह पत्रिका अपने कार्यक्षेत्र में निश्चय ही सफल होगी, हिन्दी को 'राजभाषा' बनाने में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान होगा।

मुक्तिबोध के काव्य में मनोविज्ञान

डॉ० राजकुमारी पाठक

प्रकाशक : जवाहर पुस्तकालय, मथुरा

मूल्य : 300.00

मुक्तिबोध का काव्य चिन्तन प्रधान है, कवि का अचेतन मन अनबूझ पहेली है। उसमें उतरकर, उसे समझ कर उसे अर्थ प्रदान करने का प्रयास डॉ० राजकुमारी पाठक ने अपने इस शोध ग्रन्थ में किया है। मुक्तिबोध साहित्य पर यह प्रमुख शोध ग्रन्थ है।

पुस्तक प्राप्ति

करना तेज विकास

(विकास की प्रेरणा देता काव्य संग्रह)

मूल्य : 150.00

गंगा यमुनी सभ्यता

(श्रमिकों को प्रेरित करती कविताएँ)

मूल्य : 195.00

श्री अमरेन्द्र बहादुर सिंह

वरिष्ठ उपाध्यक्ष, जे०के० पावर

शम्भुपरा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

प्रकृति की एक अनमोल निधि नीम

(कृषि स्वास्थ्य एवं पर्यावरण)

डॉ० उमेश दत्त तिवारी

महामना मालवीय फाउण्डेशन, वाराणसी

मूल्य : 50.00

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 5 **अक्टूबर 2004** **अंक : 10**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 40.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि० वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com

Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082